Vol 5, Issue 1, 2022 **Impact Factor:2.58** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2022.5.1.5016

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शिक्षा के उभरते प्रतिमान में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिणक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन

Madhu Choksey [1] , Dr. Dheeraj Shinde [2]

[1] Research Scholar, Dept. of Education, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore , M.P.
[2] Research Scholar, Dept. of Education, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore , M.P.

ABSTRACT

सारांश

विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से बालक में जीवन संघर्ष की तैयारीए चरित्र निर्माणए देश प्रेमए विश्व बन्धुत्व और आत्म अनुभूति के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते थे। आज वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखें तो यह सभी उद्देश्य समसामायिक बने स्वामी विवेकानन्द ने अपने जीवन में शिक्षा दर्शन का कार्य किया और उनका यह दृढ़ विचार था कि सिर्फ ज्ञान की जानकारी शिक्षा नहीं है वस्तुतः शिक्षा प्रायोगिक जीवन के संघर्ष की तैयारी है और उसमें चरित्र का विकास एक प्रमुख आयाम है। उनकी शिक्षा की परिभाषा- ष्व्यक्ति के अन्तर्निहित क्षमताओ की अभिव्यक्ति ही शिक्षा हैश्ष गहरा सार लिए हुए थी। वह वेदान्त दर्शन के मानने वाले थे और उनकी आस्था थी कि हर छात्र में उस परमात्मा का अंश है और सभी में कुछ न कुछ सम्भावनाएँ है ज़रूरत उसको पहचानकर उसे विकसित करना है। विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से बालक में जीवन संघर्ष की तैयारीए चरित्र निर्माणए देश प्रेमए विश्व बन्धुत्व और आत्म अनुभूति के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते थे। आज वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखें तो यह सभी उद्देश्य समसामायिक बने हुए हैंए वास्तव में वर्तमान की वैश्विक परस्थितियाँ शिक्षा के इन्हीं उद्देश्यों की तरफ हमें ले जाने के लिए प्रेरित करती है। विवेकानन्द शिक्षण विधि में भी प्रायोगिक और कर के सीखने की बात करते हैं जिस पर वर्तमान में बहुत अनुसंधान और चिंतन हो रहा है और एनसीएफ 2005 ने बाल केन्द्रित विधियों का प्रस्ताव रखा है। साथ ही विवेकानन्द आध्यात्म और विज्ञान के समन्वयन की बात भी करते हैं और जीवन में आध्यात्म को केन्द्र में मानते हैं। इसी के माध्यम से देश और विश्व में शांति की स्थापना सम्भव है। विवेकानन्द छात्रों में प्रथम गुण शिक्षक के प्रति श्रद्धा को मानते हैं और इस तत्व की आवश्यकता शिक्षण प्रक्रिया को आधार मानते हैं। विवेकानन्द युवाओं में अनन्त साहस और शक्ति के केन्द्र की बात करते हुए समाज निर्माण का आधार युवाओं के सही मार्गदर्शन और निडरता को मानते हैं। उनके इसी विश्वास के कारण आज का दिन हम कैरियर दिवस के रूप में मनाते हैं और विभिन्न शिक्षण संस्थाओं मे आज युवाओं के मार्गदर्शन हेतु कैरियर से सम्बन्धित चर्चाओंए प्रतियोगिताओंए प्रदर्शनियों आदि का आयोजन किया जाता है। वास्तव में यदि वर्तमान शैक्षिणक परिदृश्य में देश का युवा विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त कर ले तो देश विकास अवश्यमभावी होगा और विश्वबंधुत्व की स्थापना हो सकेगी।

मुख्यशब्दः- शिक्षा के उभरते प्रतिमान, स्वामी विवेकानंद, शैक्षिणक परिप्रेक्ष्य

Vol 5, Issue 1, 2022 **Impact Factor:2.58** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2022.5.1.5016

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रस्तावना

हमारे देश का गौरव बढ़ाने में बहुत से महापुरुषों ने सहयोग किया हैए जिसके कारण ही भारत को विश्व गुरु की संज्ञा दी जाती हैए इन महापुरुषों के विचार सुन कर हमे जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त होता है और हम सही मार्ग पर चलने लगते हैए यह विचार हमारे लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैए जो सम्पूर्ण विश्व में भारत की कीर्ति को स्थापित करते हैए इस पेज पर हम ऐसे ही महापुरुष के विषय में जानकारी प्रदान करने जा रहे हैए जिन्होंने अपनी तेजस्व वाणी से अमेरिका के शिकागो की धरती पर एक ज्ञान का स्तम्भ खड़ा किया हैए लाखों भारतीयों के ह्रदय स्थल को छूने वाले आदरणीय स्वामी विवेकानंद के शिक्षा के संबंध में क्या महान विचार थे ६ आईये जानते हैए उनके अदभुत विचारो को द्य

स्वामी विवेकानन्द भारत के बहुमूल्य रत्न एक जीवित क्रांति के मिशाल थेए एक व्यक्ति नही एक चमत्कार थे। आज से प्रायः एक सदी पहले पराधीन और पददलित भारत के जिस एकाकी और अंकिचन योद्धा संयासी ने हजारों मील दूर विदेश में नितांत अपरिचितों के बीच अपनी ओजमयी वाणी में भारतीय धर्म साधना के चिरंतन सत्यों का जयघोष किया। स्वामी विवेकानन्द सामायिक भारत में उन कुशल शिल्पियों में है ं जिन्होने आधाराभूत भारतीय जीवन मूल्यों की आधुनिक अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में विवेक संगत व्याख्या की। स्वामी विवेकानन्द के जीवन कोश में भारतीय नव निर्माण के उर्वर बीच यत्नपूर्वक संकलित है हीए उसमें पीड़ित और जर्जरित मानवता के पुनर्सृजन की कार्यात्मक कार्यसाधन योजना भी सम्मिलित है।

भारत के लिए स्वामी जी के विचार चिंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर है तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्यके युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन का प्रवाधान लक्ष्य भारत के स्वामी जी भारतीय संस्कृति शिक्षा तथा धर्म के समग्रता के संबंध ने आज हमारे सामने विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए यह आह्वान कि श्मानव स्वाभाव गौरव को कभी मत भूलो । हममें से प्रत्येक व्यक्ति यह घोषणा करें कि मैं ही ईश्वर हूँ जिससे बड़ा कोई न हुआ है और न ही होगा। उनके विचारानुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नही है अपितु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। चूंकि वर्तमान शिक्षा उन तत्वोंसे युक्त नही है अतः वह श्रेष्ठ शिक्षा नही है। वे शिक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नही होता। भारत की गुरू शिष्य परंपरा जिसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में निकटता के संबंध नया संपर्क रह सकें तथा विद्यार्थियों में पवित्रता ज्ञानए धैर्यए विश्वासए विनम्रता आदि के श्रेष्ठ गुणों का विकास हो सके। वे धर्म के संबंध में किसी एक धर्म को प्राथमिकता नही देते थेए स्वामी जी मानव धर्म के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होने धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठते हुए यह घोषणा की प्रत्येक धर्मए सम्प्रदाय जिस भाव में ईश्वर की आराधना करता हैए मैं उनमे से प्रत्येक यके साथ ठीक उसी भाव से आराधन करूंगा। स्वामी जी के अनुसार बाईबिलए वेदए गीताए कुरान तथा

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अन्य धर्मग्रंथ समूह मानों ईश्वर के पुस्तक में के एक-एक पृष्ठ है। वे प्रत्येक धर्म को महत्व देते थे तथा उनके सारभूत तत्वों को जो मानव जीवन को उनका चरित्र तथा ज्योति प्रदान करने में सक्षम हो को अपनाने का आहवान करते थे जिसे एक नाम दिया गया श्सर्व धर्म सम्भावश्। उन्होंने प्रत्येक धर्म के विषय में कहा कि कोई व्यक्ति जन्म से हिन्दूए ईसाईए मुस्लिमए सिक्ख या अन्य धर्म के नहीं होते। उनके अपने माता पिताए पूर्वज जिस संस्कृतिक संस्कार या परंपर से जुड़े रहते है। वे उसे सीखते और आज्ञा पालन करने वाले होते है ं।

मानव से बढ़कर और कोई सेवा श्रेष्ठ नही है और यहीं से शुरू होता है वास्तविक मानव की जीवन यात्रा। हमें आज आवश्यकता है स्वामी जी के आदर्शों पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होनेए उनके शिक्षा विचार संदेश तथा दर्शन को साकार रूप में अपना लेने की। स्वामी जी के जीवन शैली को आत्मसात करके जन जन में एकता प्रेम और दया की नदियाँ बहाकर नए युक की शुरूआत करने की। तो आईये जातिए धर्मए सम्प्रदायए पंथ और अन्य संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर एक दूसरे का हाथ थामकर माँ भारती को समृद्धिए विकास और उपलब्धि की ओर ले जाए।

स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा के संबंध में विचार

स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा के संबंध में विचार इस प्रकार है-

भारत की वर्तमान और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये हमें अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की अति आवश्यकता हैए हमें ऐसी वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता हैए जो समय के अनुकूल होए हमारी दुर्दशा का मूल कारणए नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है द्य

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र हैए यदि केवल यह इसी प्रकार की होती है तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ

इस दूषित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षित भारतीय युवा पिताए पूर्वजोंए इतिहास एवं अपनी संस्कृति से घृणा करना सीखता हैए वह अपने पवित्र वेदोंए पवित्र गीता को झूठा समझने लगता हैए इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली के द्वारा तैयार हुए युवा अपने अतीतए अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले इन सब से घृणा करने लगता है और विदेशियों की नकल करने में ही गौरव की अनुभूति करता हैए इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिव निर्माण में कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है द्य

ऐसी शिक्षा का क्या महत्व हैए जो हम भारतीय को सदैव परतंत्रता का मार्ग दिखाती हैए जो हमारे गौरवए स्वावलंबन एवं आत्म-विश्वास का क्षरण करती है द्य

स्वामी विवेकानंद जी के प्रमुख विचार

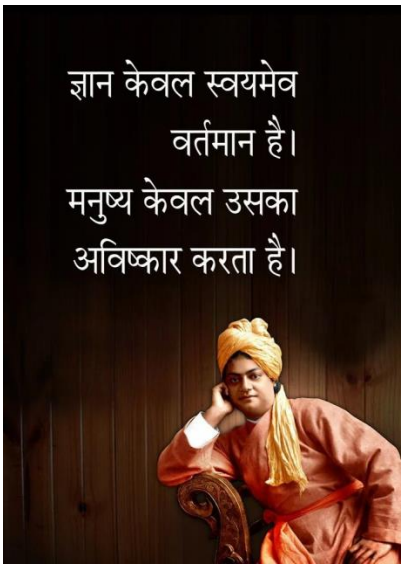

1ण्पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रताए एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यानए ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है द्य

2ण्ज्ञान स्वयं में वर्तमान हैए मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है द्य

3ण्उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तमु अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते द्य

4ण्जब तक जीनाए तब तक सीखनाए अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है द्य

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

5ण्पवित्रताए धैर्य और उद्यम- ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं द्य

6ण्लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दाए लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न होए तुम्हारा देहांत आज हो या युग मेंए तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो द्य

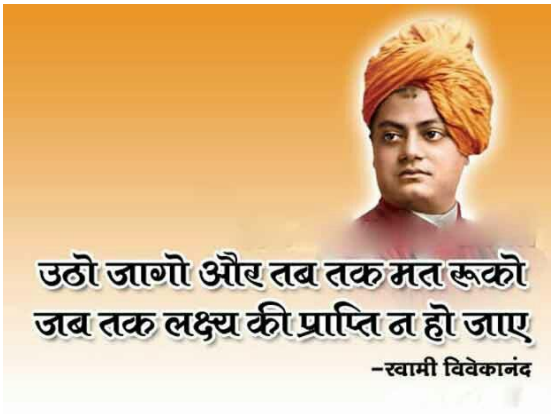

7ण्जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करोए ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहियेए नहीं तो लोगो का विश्वास उठ जाता है द्य

8ण्जब तक आप खुद पे विश्वास नहीं करते तब तक आप भागवान पर विश्वास नहीं कर सकते द्य

9ण्एक समय में एक काम करोए और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ द्य

10ण्जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी द्य

स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक विचारों की विशेषताएँ

स्वामी विवेकानन्द जी ने मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः की अभिव्यक्ति को शिक्षा माना है। स्वामी जी के अनुसारए शिक्षा जीवन संघर्ष की तैयारी है क्योंकि जो शिक्षा जीवन जीने की कला नहीं सिखाती जीवन को सम-विषय परिस्थितियों में अनुकूल आचरण करना नहीं सिखाती वह शिक्षा व्यर्थ है।

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं-

1ण् स्वामी विवेकानन्द के अनुसारए अध्यापक का चरित्र अत्यन्त उच्च कोटि का होना चाहिए।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

2ण स्वामी विवेकानन्द के अनुसारए अध्यापक को विषय का ज्ञाता तो होना ही चाहिए साथ ही उसके अन्दर प्रेमए सहानुभूतिए त्यागए निष्पक्षता की भावना का होना आवश्यक है।

3ण विद्यार्थियों के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि अपने आपको पहचानो ज्ञान तो आपके अन्दर है उसे बाहर निकालो अपनी अन्तरात्मा को चेतन करो बिना इस सबकी बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।

4ण स्वामी विवेकानन्द ने परोपकार तथा समाज सेवा को सर्वोपरि मानते हुए कहा है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।

5ण स्वामी विवेकानन्द ने दमनात्मक अनुशासन का विरोध करके प्रभावात्मक अनुशासन पर बल दिया है।

6ण स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही लौकिक समृद्धि को भी आवश्यक माना है। यही कारण है कि उन्होंने पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लौकिक विषयों को भी समावेशित किया है।

7ण स्वामी विवेकानन्द ने मन की एकाग्रता पर विशेष जोर दिया है क्योंकि मन को एकाग्र किए बिना किसी भी शिक्षण विधि का प्रभाव स्वतः न्यून होता जाता है। यद्यपि उन्होंने अनुकरण विधिए विचार-विमर्शए उपदेशए परामर्थ वैयक्तिक निर्देशन विधियों को भी शिक्षण विधि के रूप में बताया है।

8ण स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री को पुरुषों के समान स्थान देते हुए कहा है कि जिस देश में स्त्रियों का सम्मान व आदर नहीं होता वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों के उत्थान के सम्बन्ध में स्वामी जी ने कहा था कि- श्पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वे बताएँगी कि उनके लिए कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं। श

आधुनिक नेतृत्व की अवधारणा:

विवेकानंद ने बार-बार और निर्विवाद रूप से निदान किया कि दुनिया की बुनियादी कमी आर्थिकए सांस्कृतिक या राजनीतिक नहीं हैए बल्कि मनुष्य की भलाई हैए और ठीक ही तर्क दिया है कि किसी संगठन की सफलता मुख्य रूप से उसके संवैधानिक कानूनों और समझौतों पर नहीं बल्कि ईमानदारी पर निर्भर करती है। ए आत्म-बलिदानए और इसके व्यक्तिगत सदस्यों का उत्साह। विवेकानंद के लिएए सभी के लिए पूरे दिल से प्यार के साथ एक शुद्ध पारदर्शी दिमागए आदर्श नेतृत्व का आधार है। विवेकानंद की नेतृत्व शैली की एक अन्य प्रमुख विशेषता निम्नतर आत्म या श्अपंग अहंकारश का विलोपन है। विवेकानंद ने अपने जीवन में नौकर-नेतृत्व की उदात्त अवधारणा का प्रचार और अभ्यास

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

किया और अस्सी साल पहले इसे कॉर्पोरेट जगत में पेश किया गया था और आधुनिक समय में नेतृत्व की अवधारणा की सबसे शक्तिशाली कला के रूप में प्रशंसित किया गया था। "आपको एक नेता के रूप में नहींए बल्कि एक नौकर के रूप में पूरे आंदोलन की कमान संभालनी होगी।" (विवेकानंदए 1989ए खंड 5ए पृ.41)ए विवेकानंद ने अवलोकन किया। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक नेतृत्व प्रतिमान के संदर्भ मेंए एक प्रभावी शिक्षक की भूमिका लेन-देन के साथ-साथ परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली दोनों को आंतरिक बनाने की होगीए जो न केवल अकादमिक और समस्या समाधान प्रवचन के भीतर ही सीमित होगाए बल्कि जो एक साझा साझाकरण को प्रेरित करेगाए उसका निर्माण करेगा। शिक्षार्थियों के बीच रचनात्मक आवेग। एक सफल नेता बनने के लिए व्यक्ति को अपने आप को समुदाय के पैरों तले कुचल देना चाहिए। विवेकानंद ने मानवता के सामने उभरती समस्याओं को समझा। यह कारण और प्रभाव विधि है जिसके द्वारा उन्होंने समस्याओं का पता लगाया और समाधान प्रदान किया। विवेकानंद ने मूल्य आधारित प्रबंधन के बारे में राय दी। विलियम हिट ने अपनी पुस्तक श्द लीडर-मैनेजरश में चार बुनियादी लक्षणों का उल्लेख किया है जो सभी नेताओं में दिखाई देते हैं:

1. नेताओं के पास संगठन के लिए स्पष्ट दृष्टि है।

2. नेताओं के पास अपनी दृष्टि को दूसरों तक पहुंचाने की क्षमता होती है जो सिर्फ एक अच्छे विचार के बजाय एक कॉलिंग की तरह है।

3. नेताओं में दृष्टि की दिशा में काम करने के लिए दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता होती है।

4. नेताओं के पास काम करने के लिए सिस्टम को काम करने की क्षमता है। कहने की जरूरत नहीं है कि विवेकानंद में चारों लक्षण स्पष्ट थे।

नागरिकता शिक्षा:

नागरिकता शिक्षा की आधुनिक अवधारणा के दो दृष्टिकोण हैं: एक व्यक्ति अपने ही देश का नागरिक होता है जहाँ देशभक्ति एक मुख्य विषयवस्तु है। एक व्यक्ति भी एक वैश्विक नागरिक है। विवेकानंद ने इन दोनों अवधारणाओं को अपने तरीके से मिश्रित किया है। उन्होंने जोर देकर कहा: "भारत के लिए अपने पूरे प्यार के साथए और अपनी देशभक्ति और पूर्वजों के प्रति श्रद्धा के साथए मैं यह नहीं सोच सकता कि हमें अन्य देशों से बहुत कुछ सीखना है"। नागरिकता शिक्षा की अवधारणा को भविष्य के नागरिकों को एक नागरिक समाज के ढांचे में ढालना चाहिए जहां नागरिक अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होंए लोकतांत्रिक आदर्शों का सम्मान करें और साझा जिम्मेदारी के साथ

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

कल्याणकारी समाज के लिए काम करें। लोकतांत्रिक नागरिकता के लिए शिक्षा प्रथाओं और गतिविधियों का एक समूह है जिसका उद्देश्य युवा लोगों और वयस्कों को समाज में अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को ग्रहण और प्रयोग करके लोकतांत्रिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित करना है। श्लर्निंग : द ट्रेजर इनश ;1996) में उल्लिखित विभिन्न प्रकार के संकटों से निपटने के लिएए वैश्विक शिक्षा की अवधारणा ने कुछ आयामों का सुझाव दिया हैए जैसेए आत्म-खोजए पूछताछए स्थिरताए नवाचारए संचारए सहानुभूति आदि। वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जीसीई) एक गहन समझ को संदर्भित करता है कि हम सभी वैश्विक समुदाय के नागरिकों के रूप में एक साथ बंधे हैं। हमारी आशाएंए सपनेए चुनौतियां सभी आपस में जुड़ी हुई हैं। जीसीई में तीन मुख्य वैचारिक आयाम शामिल हैं: संज्ञानात्मकए सामाजिक-भावनात्मक और व्यवहारिक जो शिक्षार्थियों को एक अधिक समावेशीए न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण दुनिया में योगदान करने में सक्षम होने की आवश्यकता है।

शिक्षा और विवेकानंद का अंतर्राष्ट्रीय पहलू:

आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों के संदर्भ में शिक्षा के दर्शन और विवेकानंद की उभरती विरासत में विचारों का एक घनिष्ठ संबंध हैए कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से। आत्मा की मुक्ति और शिक्षा के माध्यम से लंबे समय से खोई हुई मानवता का उत्थान उनकी एकमात्र प्राथमिकता है। उनका शिक्षा का एक दर्शन है जो न केवल अपनी प्रकृति से पुनर्योजी हैए बल्कि यूनेस्को और अन्य संगठनों द्वारा पेश किए गए कई प्रस्तावों और सिफारिशों के समान है। विवेकानंद का जीवन और मिशन भौतिक प्रगति के आधुनिक अर्थों में मानव महिमा का एक प्रतीक है जो मनुष्य को उसकी सर्वोच्च स्थिति में पुनर्स्थापित करता है। विवेकानंद ने अपना जीवन मानव उत्कृष्टता की महान दृष्टि में आधुनिक मानवता को शिक्षित करने के लिए बिताया। उन्हें वास्तव में एक वैश्विक नागरिक के मॉडल के रूप में माना जाना चाहिएए शायद वह पहला व्यक्ति जिसने वैश्विक होने के सही अर्थ का वर्णन कियाए यानी सर्वदेशीयता और उच्चतम क्रम की राजनेता। 10 दिसंबर 1948 के महासभा संकल्प 217ए (प्प्द्ध द्वारा स्वीकृत और घोषित मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की प्रस्तावना नीचे दी गई है: प्रस्तावना: "जबकि मानव परिवार के सभी सदस्यों की अंतर्निहित गरिमा और समान और अयोग्य अधिकारों की मान्यता दुनिया में स्वतंत्रताए न्याय और शांति की नींव है।

जबकि मानवाधिकारों की अवहेलना और अवमानना के परिणामस्वरूप बर्बर कार्य हुए हैंए जिन्होंने मानव जाति की अंतरात्मा को ठेस पहुँचाई हैए और एक ऐसी दुनिया का आगमन जिसमें मनुष्य को भाषण और विश्वास की स्वतंत्रता और भय और अभाव से मुक्ति का आनंद मिलेगाए को सर्वोच्च

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

घोषित किया गया है। आम लोगों की आकांक्षा। जबकि यह आवश्यक है कि यदि मनुष्य को अत्याचार और उत्पीड़न के खिलाफ अंतिम उपाय के रूप में विद्रोह का सहारा लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाता हैए तो कानून के शासन द्वारा मानव अधिकार की रक्षा की जानी चाहिए। जबकि राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास को बढ़ावा देना आवश्यक है। जबकि संयुक्त राष्ट्र के लोगों ने चार्टर में मौलिक मानव अधिकारोंए मानव व्यक्ति की गरिमा और मूल्य और पुरुषों और महिलाओं के समान अधिकारों में अपने विश्वास की पुष्टि की है और सामाजिक प्रगति और जीवन के बेहतर मानकों को बढ़ावा देने के लिए दृढ़ संकल्प किया है। बड़ी स्वतंत्रता। जबकि सदस्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के लिए सार्वभौमिक सम्मान और पालन को बढ़ावा देने के लिए खुद को प्राप्त करने का संकल्प लिया है। जबकि इन अधिकारों और स्वतंत्रताओं की एक सामान्य समझ इस प्रतिज्ञा की पूर्ण प्राप्ति के लिए सबसे अधिक महत्व रखती है

इसलिएए अब महासभाए मानव अधिकारों की इस सार्वभौमिक घोषणा को सभी लोगों और सभी राष्ट्रों के लिए उपलब्धि के एक सामान्य मानक के रूप में घोषित करती हैए इस अंत तक कि प्रत्येक व्यक्ति और समाज का प्रत्येक अंगए इस घोषणा को लगातार ध्यान में रखते हुएए शिक्षण द्वारा प्रयास करेगा और शिक्षा इन अधिकारों और स्वतंत्रताओं के सम्मान को बढ़ावा देने के लिए और प्रगतिशील उपायों द्वाराए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीयए उनकी सार्वभौमिक और प्रभावी मान्यता और पालन को सुरक्षित करने के लिएए दोनों सदस्य राज्यों के लोगों के बीच और उनके अधिकार क्षेत्र के तहत क्षेत्रों के लोगों के बीच। शिक्षाए के अनुसार विवेकानंदए स्वयं की वास्तविक प्रकृति की प्राप्ति की सुविधा प्रदान करते हैं। यह मनुष्य को जीवन की सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है और अंततः मनुष्य को उच्चतम संभावनाओं के क्षेत्र में ले जाता है। शिक्षा के विकास पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग ने यूनेस्को को अपनी रिपोर्ट मेंए श्लर्निंग टू बीश्रू द वर्ल्ड ऑफ़ एजुकेशन टुडे एंड टुमॉरोश ;1972) एडगर फॉरे की अध्यक्षता में आधुनिक शिक्षा के क्षितिज में एक उल्लेखनीय सफलता है। आयोग ने अपना कामकाज ऐसे समय में शुरू किया थाए जब तेजी से सामाजिक-सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक बदलाव आकार ले रहे थे। ज्ञान का विस्फोट हो रहा था और मनुष्य की आकांक्षाएं तेजी से बदल रही थीं। परिणामस्वरूपए विश्व शांतिए अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व और मूल्य आधारित समझ की माँगें उभर रही थीं। इसलिएए लर्निंग टू बी (1972) श्एक कालातीत प्राथमिकताश के रूप में उभरता है। "एक पूर्ण मनुष्य में व्यक्ति का शारीरिकए बौद्धिकए भावनात्मक और नैतिक एकीकरणए शिक्षा के मौलिक उद्देश्य की एक व्यापक परिभाषा है।" मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणाए अनुच्छेद 26 (2) रिपोर्ट की पृष्ठभूमि दर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है य शिक्षा को मानव व्यक्तित्व के पूर्ण विकास और मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के सम्मान को मजबूत करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए। यह सभी राष्ट्रोंए नस्लीय या धार्मिक समूहों के बीच समझए सहिष्णुता और मित्रता को बढ़ावा देगा और शांति बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों को आगे बढ़ाएगा। रिपोर्ट

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

(1972) के अनुसारए शिक्षा को व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के साथ-साथ शांति और सहिष्णुताए अहिंसा और अंतर्राष्ट्रीय समझ के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। जैसे-जैसे राष्ट्र और शिक्षा धीरे-धीरे अधिक से अधिक जुड़ते जा रहे हैंए इसलिए शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है:

*अन्य लोगों की समझ के रूप में अंतरसांस्कृतिक शिक्षा का विकास करना और बहुलवादए आपसी समझ और शांति के मूल्यों के सम्मान की भावना में अन्योन्याश्रितता की सराहना करनाय

*शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता को बढ़ावा देनाए नागरिकता शिक्षा कार्यक्रमों के विकास के माध्यम से मूल मूल्यों पर जोर देना

निष्कर्ष

स्वामी जी अपने देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनताए इन दो से बहुत चिन्तित थे और इसे दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। शिक्षण प्रक्रिया का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिस पर स्वामीजी की दृष्टि न पड़ी हो। स्वामी जी का मानना है कि ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध हैए कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आताए सब अनदर ही है। समस्त ज्ञान चाहे वह लौकिक हो या आध्यात्मिकए मनुष्य के मन में है। इसका आवरण ज्यों-ज्यों हटता जाता हैए त्यों-त्यों हमारे ज्ञान की वृद्धि होती जाती है। जिस व्यक्ति से यह आवरण हट जाता है उसे ज्ञानी और जिस पर यह पड़ा हुआ है उसे अज्ञानी कहते है ं। इसी संदर्भ में स्वामी जी ने कहा कि-श्मनुष्य की आनतर्निहित पूर्ण ता का े अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।श

यदि हम शिक्षा सम्बन्धी स्वामी जी के सम्प्रत्यय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान के अभ्युदय के पश्चात शिक्षा सम्बन्धी जो संकल्पना आज उभर कर आयी हैए वह स्वामी जी के विचारों के पूर्णतः अनुकूल है। स्वामीजी ने मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा को ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया हैए इसे ही वर्तमान शिक्षा प्रणली में ज्ञान एवं कौशल में ही देखा जा सकता है। आज भी शिक्षा अन्तर्निहित शक्ति के रूप में जानी जा रही है। स्वामी जी की शिक्षा का आदर्श है-पूर्ण मानव का निर्माण। इस पूर्णता हेतु वे मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास पर समान बल देते थे। इन दोनों प्रकार के विकास के लिए स्वमी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किये। जैसे लौकिक उद्देश्य के अन्तर्गत-व्यक्तित्वए शारीरिकए चारित्रिकए आत्म विश्वासए आत्मरक्षाए मानसिक सांस्कृतिकए मानव निर्माणए व्यावसासिक एवं धार्मिक शिक्षा के उद्देश्य तथा आध्यात्मिक उद्देश्य। यदि हम स्वामी जी द्वारा बताये गये शिक्षा में सभी उद्देश्यों का गहनता से अध्ययन करते है ं तो वर्तमान भारतीय शिक्षा में सभी

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

उद्देश्य सम्मिलित हैं। क्योंकि सभी शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य व्यक्ति का निर्माण करना चाहिए। इस कटौती पर स्वामी जी के शैक्षिक उद्देश्य खरे उतरते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अहमदए एफ. और गर्गए एस. (2015) श्साइंटिफिक ह्यूमनिज्म: रिपोजीशनिंग इंडियन एजुकेशनश्ए वाइवा बुक्सए नई दिल्ली।

अहमदए एफ. और ग्रैगए एस (2010) साइंटिफिक ह्यूमैनिज्म: रिपोजीशनिंग इंडियन एजुकेशन। नई दिल्ली : चिरायु पुस्तकें

बसुए एस. (2017) "धार्मिक पुनरुत्थानवाद राष्ट्रवादी प्रवचन के रूप में: स्वामी विवेकानंद और उन्नीसवीं शताब्दी बंगाल में नया हिंदू धर्म"ए ओयूपीए नई दिल्ली। भजनंदाए एस. (2016) यूथ पावर एंड द पावर ऑफ आइडियाज। मैसूर: श्री रामकृष्ण विद्याशाला।

भुइयांए पीआर (2018) स्वामी विवेकानंद: रिसर्जेंट इंडिया के मसीहा। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

भुइयांए पीआर (2018) "स्वामी विवेकानंद: रिसर्जेंट इंडिया के मसीहा"ए अटलांटिक प्रकाशक और वितरकए नई दिल्ली।

बुधानंदए स्व. (2015)ए ष्कैन वन बी साइंटिफिक एंड स्टिल स्पिरिचुअल"ए अद्वैत आश्रमए कोलकाता।

बर्कए एम.एल. (2014) श्स्वामी विवेकानंद: आधुनिक युग के प्रोफेसरश्ए आरकेएमआईसीए कोलकाता।

बर्कए एम.एल. (2016) स्वामी विवेकानंद: आधुनिक युग के पैगंबर कलकत्ता: रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान।

बर्कए एम.एल. (2016) स्वामी विवेकानंद इन द वेस्ट: न्यू डिस्कवरीज। कलकत्ता: अद्वैत आश्रम। 6 खंड।

चक्रवर्तीए एस.के. (2017) स्वामी विवेकानंद: पवित्र राष्ट्र के नेता। कोलकाता: अद्वैत आश्रम

चट्टोपाध्यायए एस.एन. एड. (2016)ए ष्स्वामी विवेकानंद: हिज ग्लोबल विजन"ए पुंठी पुस्तकए कोलकाता।

I J A M S R
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

चौधरीए ए. (2016) विवेकानंद: ए बॉर्न लीडर। कोलकाता: अद्वैत आश्रम।

घोषए एस.पी. (2016) स्वामी विवेकानंद का आर्थिक विचार आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में: भारत एक केस स्टडी के रूप में। कोलकाता: रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर

जोन्सए जे. डब्ल्यू. (2017)ए श्रिलिजन एंड साइकोलॉजी इन ट्रांजिशनश्र येल यूनिवर्सिटी प्रेसए यूएसएश्र

खडसे यू.एम और सिंह एस. (2016) शिक्षा के समकालीन आयामों की तुलना स्वामी विवेकानंद की मानव-निर्माण शिक्षा के आयामों से। अंतर्राष्ट्रीय अंतःविषय अनुसंधान जर्नल वॉल्यूम। टप् अंक प्प्ए पैछ 2249- 9598

लोकेश्वरानंदए स्व. ईडी। (2015)ए श्चिंतनायक विवेकानंदश्ए आरकेएमआईसीए कोलकाता।

महामेधनंदए एस. (एड.) (2016द्ध शिक्षा: परिप्रेक्ष्य और व्यवहार। वेदांत केसरीए वॉल्यूम। 103ए संख्या 12। आईएसएसएन 0042.2983।

चेन्नई: श्री रामकृष्ण प्रिंटिंग प्रेस मजूमदारए ए.के. (2017द्धए श्अंडरस्टैंडिंग विवेकानंदश्ए संस्कृत पुस्तक भंडारए कोलकाता।

मजूमदारए आर.सी. (2015द्धए श्स्वामी विवेकानंद: ए हिस्टोरिकल रिव्यूश्ए जनरल प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा।

लिमिटेड कोलकाता। मोहंतीए जे. (2015द्ध मॉडर्न ट्रेंड्स इन इंडियन एजुकेशन। नई दिल्ली: डीप एंड डीप पब्लिकेशन्स प्रा। लिमिटेड मु

खर्जीए के.के. (2017द्ध विश्व के कुछ महान शिक्षक। कलकत्ता: दासगुप्ता एंड कंपनी प्रा। लिमिटेड

मुखर्जीए जी. (2016द्ध श्भारत का एक वैकल्पिक विचार: टैगोर और विवेकानंद"ए रूटलेज मुखर्जीए एच. (2016द्धए श्विवेकानंद एंड इंडियन फ्रीडमश्ए आरकेएमआईसीए कोलकाता।

मुखर्जीए एस.एल. (2016द्ध द फिलॉसफी ऑफ एमओ-मेकिंगए न्यू सेंट्रल बुक एजेंसी (पी) लिमिटेडए कोलकाता

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

मुखोपाध्यायए एम (एड) (2018द्ध एक वैश्विक समाज के लिए शिक्षा: इंटरफेथ आयाम। दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन

नित्यस्वरुपानंदए एस. (2016द्ध एजुकेशन फॉर ह्यूमन यूनिटी एंड वर्ल्ड सिविलाइजेशन। कोलकाता: रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर।